इकाई 9 इंगलैंड में औद्योगिक पूंजीवाद

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 अठारहवीं और आरंभिक उन्नीसवीं शताब्दियों की औद्योगिक क्रांति का महत्व
9.3 औद्योगिक पूंजीवाद के उदय की पृष्ठभूमि
    9.3.1 वाणिज्यिक उत्पादन की प्रकृति
    9.3.2 जनसंख्या वृद्धि
    9.3.3 पूंजी की आपूर्ति
9.4 उत्पादन उद्योग
    9.4.1 नए परिवर्तन और इसके प्रभाव
    9.4.2 उद्यमशीलता की सामाजिक प्रेरणा
    9.4.3 परिणाम
9.5 बाजार और मांग
    9.5.1 राज्य की भूमिका
9.6 औद्योगिक क्रांति की पुनर्स्थापना
    9.6.1 ग्रैजुअलिस्ट आरग्यूमेंट और इसके आलोचक
9.7 1840 के बाद औद्योगिक पूंजीवाद में आई मजबूती
    9.7.1 रेलवे का महत्व
    9.7.2 अभिनव परिवर्तन
    9.7.3 पूंजी
    9.7.4 प्रतियोगिता और औपनिवेशिक बाजार
9.8 सारांश
9.9 शब्दावली
9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- समझ सकेंगे कि किस प्रकार कुछ इतिहासकारों ने अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में इंगलैंड में हुई औद्योगिक क्रांति के लिए महत्वपूर्ण युग की अवधारणा को नए पहलू से देखा है,
- यह समझ सकेंगे कि इन इतिहासकारों ने फिर भी यह माना कि इंगलैंड में औद्योगिक पूंजी में हुई वृद्धि के लिए अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी निर्णायक साबित हुई ,
- सत्रहवीं और आरंभिक अठारहवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति से पहले हुई कृषि क्रांति के महत्व को समझ सकेंगे,
- 18वीं और आरंभिक 19वीं शताब्दी में औद्योगिक पूंजी के विकास को आगे बढ़ाने में पूंजी की आपूर्ति, उत्पादन के विभिन्न तरीकों, अभिनव परिवर्तन, व्यापार और बाजार के आपसी सम्पर्कों की भूमिका समझ सकेंगे, और
- यह जान सकेंगे कि किस प्रकार 1840 के बाद जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे नए औद्योगिक देशों के उदय से औद्योगीकरण की प्रकृति बिलकुल बदल गई।

9.1 प्रस्तावना

औद्योगिक पूंजीवाद के इतिहास में इंगलैंड का स्थान स्वर्णाक्षरों में अंकित है। यह पहला 'औद्योगीकृत राष्ट्र' था, और जैसा कि ऊपर बताया गया है बाद में औद्योगीकृत होने वाले देशों ने इंगलैंड से बहुत कुछ सीखा और उनका अनुगमन भी किया। औद्योगिक पूंजीवाद की शुरुआत करने में इंगलैंड का महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए इस इकाई में इंगलैंड में होने वाले औद्योगीकरण के आरंभ पर विशेष बल दिया गया है। यह दो भागों में विभाजित है : (I) औद्योगिक क्रांति (लगभग 1740-1840) (2) उन्नीसवीं शताब्दी के मध्‌ और उत्तरार्द्ध में औद्योगिक पूंजीवाद की मजबूती और संकट

9.2 अठारहवीं और आरंभिक उन्नीसवीं शताब्दियों की औद्योगिक क्रांति का महत्व

इंगलैंड में औद्योगिक पूंजीवाद के आर्थिक इतिहास पर विचार विमर्श करते समय अठारहवीं और आरंभिक उन्नीसवीं शताब्दियों में हुई औद्योगिक क्रांति हमेशा केंद्र में रहती है। निस्संदेह जैसा कि इतिहासकारों और अर्थशास्त्रियों ने बताया है कि यूरोप के किसी भी देश की अपेक्षा इस समय इंगलैंड के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन में औद्योगिक पूंजी एक महत्वपूर्ण कारक बन गया था जिसके परिणामस्वरूप 'क्रांतिकारी' परिवर्तन हुए और 'औद्योगिक क्रांति' हुई। अन्य यूरोपीय देशों द्वारा अपनाए गए मार्गों पर 'प्रथम औद्योगीकरणकर्ता' का प्रभाव स्पष्ट था।

पॉल मैन्टौक्स (1928), जी.अनविन (1927), डब्ल्यू एश्ले (1914), जॉन क्लैपहेम (1926-38) और अन्य आरंभिक शोधकर्ताओं के पथ का अनुगमन करते हुए हाल के कई प्रभावी 'संशोधनवादी' विद्वानों ने इसकी नई व्याख्या करने की कोशिश की। उन्होंने मैन्टौक्स के इस विचार का समर्थन किया कि 'इस विकास की तीव्रता के बावजूद औद्योगिक क्रांति दूरस्थ कारणों की उपज थी।' महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने हीटन (1932) के तर्क का भी समर्थन किया जिसने इस संदर्भ में 'क्रांति' शब्द की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न लगाया :"150 वर्षों तक चलने वाली क्रांति और कम से कम अगले 150 वर्षों तक चलने वाली इस गतिविधि को अलग नाम देना उचित होगा।'' उन्होंने जोर देकर कहा कि 'क्रांति' के समय इंगलैंड में औद्योगिक पूंजी का प्रभाव कुछ उद्योगों और कुछ क्षेत्रों तक सीमित था। उन्होंने कहा कि इंगलैंड में औद्योगिक पूंजी की बढ़ती महत्ता को 'क्रांति' (यहां तक कि औद्योगिक क्रांति) की संज्ञा नहीं दी जा सकती। कुछ अन्य विद्वानों ने भी इसी तरह सोचते हुए कहा कि यूरोप में कुछ ऐसे 'परिक्षेत्र' (एन्कलेव) थे जहां इंगलैंड के समान ही औद्योगिक पूंजी का महत्व बढ़ रहा था। उपर्युक्त वर्णित विचारों के साथ-साथ फर्नांड ब्रॉडेल का भी विचार सामने आया जिनके अनुसार यूरोपीय पूंजीवाद एक लम्बी प्रक्रिया का परिणाम था जिसे आसानी से किसी खास समय या देश से नहीं बांधा जा सकता। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि इमैन्युएल वालरस्टीन ने भी पूंजीवाद और 'विश्व व्यवस्था' के संबंधों की बात की थी। उन्होंने कहा था कि इस कड़ी के केंद्र में यूरोप था जिसका विकास पन्द्रहवीं शताब्दियों से हो रहा था।

इन सारे कारकों को सामने रखने से यह बात सामने आती है कि इंगलैंड में खास अवधि में औद्योगिक पूंजी संबंधी गतिविधियों के महत्व को जरूरत से ज्यादा महत्व देना गलत है या यूरोप में औद्योगिक पूंजीवाद के विकास में इसके महत्व को बढ़ा चढ़ा कर नहीं देखना चाहिए। इंगलैंड और यूरोप में औद्योगिक पूंजीवाद के स्थापित इतिहास में यह संशोधन उपयोगी लगता है। परंतु हाल में हुई बहस में ब्रिटिश इतिहासकार मैक्सिन बर्ग और पैट हडसन ने इस विचार की भी उचित ढंग से 'पुनर्स्थापना' की कि अठारहवीं और आरंभिक उन्नीसवीं शताब्दी में इंगलैड में औद्योगिक पूंजी देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। उन्होंने इस धारणा की भी 'पुनर्स्थापना' की कि इंगलैंड में अठारहवीं श्ताब्दी के दौरान हुई आर्थिक गतिविधियां 'क्रांतिकारी' थीं और इसे 'औद्योगिक क्रांति' कहना उचित है।

इस 'पुनर्स्थापना' से यूरोप में औद्योगिक पूंजीवाद के विभिन्न पक्ष प्रभावित नहीं हुए जिस पर 'संशोधनवादी' इतिहासकारों ने बहस करना उचित नहीं समझा। इन अवधारणाओं में यह पक्ष शामिल था कि यूरोप के किसी

भी देश की अपेक्षा इंगलैंड में अठारहवीं और आरंभिक उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान औद्योगिक पूंजी तीव्रता से बढ़ी। वे इस बात से भी सहमत थे कि इंगलिश उत्पादक जिस समय यह परिवर्तन कर रहे थे उनके सामने कोई 'प्रारूप' (या मॉडल) नहीं था। वे अपनी असफलताओं और आस पास के लोगों की असफलताओं से सीखते हुए आगे बढ़े। इन अवधारणाओं के साथ-साथ यह विचार अपने स्थान पर कायम रहा कि इंगलैंड में हुई 'औद्योगिक क्रांति' का समय यूरोप में औद्योगिक पूंजीवाद के विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ब्रिटिश इतिहासकारों ने इस 'पुनर्स्थापना' के द्वारा इंगलैंड में हुई औद्योगिक क्रांति पर विशेष बल दिया और यूरोप में हुए विकास के लिए उसे अति महत्वपूर्ण बताया।

9.3 औद्योगिक पूंजीवाद के उदय की पृष्ठभूमि

इंगलैंड में औद्योगिक पूंजीवाद के विकास और 'औद्योगिक क्रांति' के पीछे अनेक कारक काम कर रहे थे उनमें 'कृषि क्रांति' का विशेष महत्व था। यह कृषि क्रांति सत्रहवीं और आरंभिक अठारहवीं शताब्दियों के दौरान कृषि में हुए वाणिज्यिकरण का परिणाम था। इस समय इंगलैंड की कृषि व्यवस्था में खेती कमोबेश बाजारोन्मुख हो गई थी। मिट्‌टी, जलवायु, स्थल और उत्पाद् के अनुसार इसे विशेषीकृत किया गया था। पशुधन और पशुधन-उत्पादों के मूल्यों में विशेषज्ञता नहीं थी। अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग तरीके से फसल उगाई जाती थी। परंतु समग्र रूप से इन खेतों में अनाज और चारा उगाया जाता था। जानवर पालने और अनाज उगाने में लोगों की रुचि थी। ईस्ट ऐंग्लिया, एसेक्स, केंट, डोरसेट, मिडलैंड और मोनमोथ के कुछ हिस्सों, हेरफोर्ड और पेम्ब्रोकशायर में ज्यादातर गेहूं का उत्पादन होता था। कैम्ब्रिजशायर, हर्टफोर्ड शायर, बर्कशायर, विल्टशायर और योर्कशायर के हिस्सों में जौ की विशेष तौर पर खेती की जाती थी। नॉर्थमबरलैंड, डरहम, लैंकशायर, शेशायर, डरबीशायर, नोटिंगमशायर और लिंकोलशायर में जई (oats) की खेती विशेष रूप से की जाती थी। हालांकि इस प्रकार के विभाजन का मुख्य कारण भोजन की प्रवृत्ति थी परंतु इसके साथ साथ अन्य कारणों से भी इन इलाकों में अलग अलग फसल उगाई जाती थी, मसलन मीडलैंड की चिकनी मिट्‌टी गेहूं के उत्पादन के लिए उपयुक्त थी। बाजार के लिए अतिरिक्त उत्पादन होता था; विभिन्न क्षेत्रों के बीच विनिमय होता था और लंदन जैसे औद्योगिक और वाणिज्यिक केंद्रों में अनाज बेचा जाता था।

9.3.1 वाणिज्यिक उत्पादन की प्रकृति

वाणिज्यिक उत्पादन मुख्य रूप से बड़े और छोटे भूमिपतियों के बड़े काश्तकारों के खेतों पर किया जाता था। इन सम्पत्तियों (हॉवर्ड, टॉलबोट्‌स और अन्य कम महत्वपूर्ण स्कवायर्स) का सरोकार इनकी भूमि की उत्पादकता से नहीं बल्कि इनसे प्राप्त होने वाले लगान से था। परंतु ऊंची लगान प्राप्त करने के लिए कुछ सुधार किए जाते थे। ये कई प्रकार के काश्तकारों के साथ काम करते थे जिनमें कुछ को आजीवन काश्तकारियां दे दी जाती थीं और कुछ खिदमती काश्तकार (कॉटर्स) थे जिन्हें मर्जी के अनुसार हटाया भी जा सकता था। कई पूर्ण स्वामी या उन्मुक्त स्वामी (फ्री होल्डर्स) भी थे जो एक खास लगान देकर मालिक की मांगों से मुक्त हो जाते थे और कुछ पट्‌टेदार (कॉपी होल्डर्स) भी थे (जिनके अधिकार उन्हें प्राप्त पट्‌टे पर आधारित था) जो अपनी जोत के अलावा इन सम्पदाओं की अतिरिक्त भूमि से भी लगान वसूल करते थे। देश की आधी से भी अधिक जमीन हेम्पशायर से लेकर यौर्कशायर तक फैली हुई थी जहां खेत तीन हिस्सों में विभाजित थे। खेती खुले मैदान में होती थी और इसमें तीन खेत में से एक खेत को परती छोड़ दिया जाता था। अलग अलग मौसमों में अ ग अलग अनाज बोया जाता था परंतु यह बोआई दो ही खेतों में होती थी। तीसरा खेत उर्वरता और ऊर्जा अर्जित करने के लिए छोड़ दिया जाता था। चरागाह पर सबका अधिकार था। इस व्यवस्था का लाभ यह था कि इसमें एक कृषि चक्र अपनाया जाता था और इसमें स्थल की कोई समस्या नहीं होती थी। यह निस्संदेह एक लचीली व्यवस्था थी जहां अलग अलग फसलें बारी बारी से उगाई जा सकती थीं परंतु खेत छोटे होने के कारण जल-निकासी जैसे मामलों पर लोग व्यक्तिगत रूप से काम नहीं कर पाते थे।

इन परिस्थितियों में जहां पूंजी कृषि के साथ बंधी हुई थी और खेती से अच्छा खासा मुनाफा हो रहा था, लोगों को खेती से सीधा भी मुनाफा हो रहा था और लोग लगान भी कमा रहे थे, देश में औद्योगिक पूंजीवाद के उदय के लिए कृषि से उद्योग की ओर पूंजी का हस्तांतरण प्रमुख जरूरत थी। इसके साथ-साथ औद्योगिक पूंजी के विकास के लिए कृषि उत्पादकता में वृद्धि जरूरी थी ताकि अस्थाई और स्थाई औद्योगिक मजदूरों के लिए पर्याप्त भोजन

जुटाया जा सके। खेती के पुनर्संगठन से भी आरंभ में उपज में वृद्धि हुई परंतु अठारहवीं शताब्दी के अंत में खेती में प्रयुक्त औद्योगिक प्रौद्योगिकी के कारण सुधार आया। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में कृषि से उद्योग की ओर पूंजी का स्थानांतरण धीरे-धीरे हुआ। उत्तर और मिडलैंड के बड़े सम्पदा स्वामियों ने खनन में निवेश करना शुरू किया। शहरी मिल्कियत किराए पर उठाई जाने लगी। उत्पादन की प्रौद्योगिकी में होने वाले बदलाव और इन परिवर्तनों को बड़े पैमाने पर लागू किए जाने के कारण इस प्रकार के परिवर्तन हुए।

सत्रहवीं शताब्दी के अंत से ही उत्पादकता की वृद्धि के लिए नए प्रौद्योगिकी सुधार किए जाने लगे। बदल -बदल कर फसलें बड़ा चुकन्दर, चुकन्दर, वनमेथी, सेनफायन पौधा उगाई जाने लगीं थीं जिनमें मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने का गुण था। अब मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए उसे खाली छोड़ने की जरूरत नहीं थी। चिकनी मिट्टी (चूना और मिट्टी के मिश्रण से बनाई गई मिट्टी) को बालूई मिट्टी में खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता था और इस समय तक आते आते इसका कई इलाकों में उपयोग किया जाने लगा। चारा और अनाज के उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ लगातार खेती होने वाली भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिए विस्काउंट, टाउनशेंड, थॉमस कुक (अर्ल ऑफ लेसेस्टर) और लॉर्ड लॉविल ने विशेष प्रयत्न किया था। उन्होंने अपनी सम्पदाओं (वोबर्न पेटवर्थ और वेन्टवर्थ) में इसका प्रयोग किया था और उनकी इन उपलब्धियों का अनुगमन मीडलैंड के स्वामियों (जैसे रॉबर्ट बेक्वेल) ने किया जिन्होंनें भेड़ और अन्य पशुओं की नस्ल तैयार की थी। अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक ये प्रौद्योगिकियां काश्तकारों के बीच लोकप्रिय हो गईं जिनका झुकाव व्यापार की ओर था और जो अपनी उपज बढ़ाना चाहते थे। संसद के अधिनियमों द्वारा छोटी जोतों को एक साथ मिलाकर घेरेबंदी कर दी गई। काश्तकार की हैसियत में परिवर्तन आने के कारण भी बदलाव आया। ऊंची लगान प्राप्त करने के उद्देश्य से मालिकों ने आजीवन काश्तकारी देने की प्रथा समाप्त कर दी और बीच-बीच में लगान बढ़ाते रहे। इस प्रकार जिन्होंने जमीन ली उनका झुकाव बाजार की ओर बढ़ा। उन्होंने पूर्ण स्वामित्व और पट्टेदारी भी हासिल की और इस प्रकार कम अवधि की काश्तकारी के लिए अधिक जमीन उपलब्ध कराई। आरंभ में शनैः-शनैः बड़ी भू सम्पदाओं, जिसपर सार्वजनिक या खुले तौर पर खेती की जाती थी, की घेराबंदी (एन्क्लोजर) की गई और काश्तकारों के साथ यह समझौता उस समय किया गया जब फसल कम हुई और आनाज के दाम ऊंचे उठे। उत्पादकता में वृद्धि और विकास तथा औद्योगीकरण स्तर को बनाए रखने के लिए खेतों के छोटे-छोटे टुकड़ों और सार्वजनिक खेतों को एक साथ मिला दिया गया। ग्रामीण जनसंख्या को अधिक से अधिक औद्योगिक श्रमिक के रूप में उपलब्ध कराने के लिए भी ऐसा किया गया। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में जनसंख्या वृद्धि बड़े पैमाने पर उत्पादन और शहरों के बढ़ते आकार से यह स्थापित हो गया कि वाणिज्यिक खेती द्वारा ही अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। इसी समय खाद्यान्न पदार्थों के मूल्य बढ़े और 1759 के आस-पास संसद के अधिनियम के द्वारा खेतों के बड़े पैमाने पर घेराबंदी की गई। इसके बाद 1781 तक घेराबंदी के अधिनियमों की संख्या यदाकदा 30 के नीचे रही और जिस समय खाद्यान्न के दाम बढ़े (1764-65, 1770-74, 1777 आदि) उन वर्षों में सबसे ज्यादा सक्रियता रही। इस प्रकार के अधिनियमों के लिए सार्वजनिक सभा बुलाई जाती थी। एक निजी विधेयक का प्रारूप तैयार किया जाता था। इसे संसदीय समिति को भेजा जाता था जो अधिनियम पारित करती थी और आयुक्तों की नियुक्ति करती थी जो घेराबंदी के पहले और बाद भूमि के मूल्य का मूल्यांकन करते थे। इसके अलावा उन गरीबों की भलाई और सहायता के लिए जो इस पुनर्वितरण से प्रभावित होते थे, एक राशि भी तय की जाती थी।

इन परिस्थितियों में हालांकि विश्वस्त आंकड़े प्राप्त करना मुश्किल है परंतु निस्संदेह शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रीय उत्पादन तेजी से बढ़ा (टीएसएशटन) उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम दशकों में यह प्रवृत्ति जारी रही और 1830 के दशक में खेती में और भी वैज्ञानिक प्रयोग किए गए। इसके लिए 1838 में स्थापित रॉयल एग्रीकल्चरल सोसाइटी भी काफी हद तक जिम्मेदार थी। परंतु इसके अलावा खेती में सुधार के लिए और भी काम किए गए। मसलन पानी का निकास जो चिकनी मिट्टी के लिए बहुत जरूरी होता है। यह कार्य 1820 के दशक में तेजी से हुआ। 1840 के दशक में उर्वरकों का भारी प्रयोग हुआ।

इन परिस्थितियों में इंगलैंड और वेल्स में मक्के का उत्पादन 1800 तक आते-आते 14.8 मिलियन क्वाटर (1 क्वाटर=28 पौंड) से बढ़कर 21.1 मिलियन क्वाटर हो गया। अधिक भूमि पर खेती किए जाने और गहनता से खेती किए जाने के कारण उत्पादकता में वृद्धि हुई। उदाहरण के लिए अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गेहूं के प्रति एकड़ उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई। पशुपालन के मामले में यह कहना थोड़ा मुश्किल है कि भेड़ और पशुधन के आकार और संख्या में कितनी वृद्धि हुई ; कितने पशु पाले और बेचे गए। यह भी बताना कठिन है कि मांस की उत्पादकता कितनी बढ़ी क्योंकि 1745 में महामारी फैली थी और 1750 में अकाल आया था। 1830-40 के दशकों में 'उच्च खेती' (हाई फार्मिंग) के कारण खेती के साथ-साथ पशुपालन की प्रवृत्ति भी बढ़ी। कृषि उत्पादन में आने वाले परिवर्तनों से कई उद्योग सीधे प्रभावित हुए। स्वाभाविक रूप से अनाज कूटने

(मिलिंग) और पकाने वाले (बेकिंग) उद्योग ने बढ़त ले ली। परंतु गेहूं और जौ की फसल ज्यादातर बीयर और व्हिस्की और स्टार्च बनाने वाले उद्योगों को दे दी जाती थी। स्पष्टतया पशु उत्पाद की आपूर्ति में वृद्धि होने से ऊन और चर्बी के उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई।

9.3.2 जनसंख्या वृद्धि

अठारहवीं शताब्दी के दौरान कृषि की उत्पादकता में वृद्धि होने से औद्योगिक पूंजीवाद का विकास तो हुआ ही साथ ही साथ जनसंख्या भी तेजी से बढ़ी। उस समय स्थिर जनसंख्या में उत्पादकता बढ़ाने की विधियां तुलनात्मक रूप से सीमित थीं और प्रौद्योगिक विकास उस हद तक नहीं हुआ था कि श्रमिक और आम जनता आत्म निर्भर होकर विकास कर सकें। जनसंख्या के बढ़ने से श्रमिकों की उपलब्धता भी बढ़ी और श्रमिकों की उपलब्धता और चीजों की मांग में वृद्धि हुई ; ये दोनों ही तत्व औद्योगिक पूंजीवाद के विकास के लिए जरूरी थे। इस शताब्दी में निस्संदेह जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। 1701 में इंगलैंड और वेल्स में यह जनसंख्या 5.83 मिलियन थी जो 1801 में 9.16 मिलियन हो गई।

आगे हम इस बात पर विचार करने जा रहे हैं कि यह वृद्धि कैसे हुई और इसका प्रभाव क्या पड़ा। स्रोत के रूप में गिरजाघरों के रजिस्टरों में इस अवधि में दफन किए लोगों की सूचियां हैं। परंतु इन रजिस्टरों को जन्म और मृत्यु के लिए बहुत विश्वस्त स्रोत नहीं माना जा सकता क्योंकि समय-समय पर इनकी विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न लगाया जाता रहा है। इन स्रोतों के संदेह के घेरे में आ जाने से कुछ अनुमानों पर प्रश्न चिह्न लग जाता है :

i) वृद्धि का वास्तविक कम, जो आमतौर पर 1751 तक धीरे-धीरे बढ़ा (उस समय जनसंख्या 6.14 मिलियन थी) और उसके बाद तेजी से विकास हुआ।
ii) सवाल यह है कि जनसंख्या में हुई वृद्धि जन्मदर में वृद्धि के कारण हुई या मृत्यु दर में गिरावट के कारण। आमतौर पर यह बताया जाता है कि चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि होने, महामारियों की प्रवृत्ति में बदलाव आने, पूरे देश में पौष्टिक आलू की उपलब्धता और उपभोग में वृद्धि होने के कारण मृत्युदर में कमी आई।

परंतु कई अनुसंधानों से यह बात सामने आई है कि जनसंख्या में हुई वृद्धि का कारण जन्मदर में हुई वृद्धि ही थी। कुछ अध्ययन यह दिखाते हैं कि समृद्धि से बड़े परिवार की प्रवृत्ति पनपती है। कुछ अन्य अनुसंधानों में यह दिखाया गया है अठारहवीं शताब्दी में चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता और समाज पर पड़ने वाले उसके प्रभाव को बढ़ा चढ़ा कर बताया गया है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि जन्मदर में वृद्धि को स्थापित करने के लिए कोई ठोस आधार मौजूद नहीं है क्योंकि उन पुराने रजिस्टरों के आधार पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।

9.3.3 पूंजी की आपूर्ति

धन और कोष की नियमित और पर्याप्त उपलब्धता के बाद ही औद्योगिक पूंजीवाद ऊपर बताए गए परिवर्तन का सफलतापूर्वक इस्तेमाल कर सकता था। ऐसे देश में जहां सिक्के का उत्पादन अनियमित था और जहां सोने, चांदी और तांबे के सिक्कों की हमेशा कमी रहती थी वहां पर्याप्त ऋण व्यवस्था की आवश्यकता थी। जमीन के आधार पर तो निवेश और ऋण मिल जाते थे परंतु उद्योग को ऋण मिलना मुश्किल था। होर्स, काउट्स, चिल्ड्स और ड्रमंड्स जैसे प्रमुख बैंक कुलीनतंत्र को ऋण देते थे जो अपनी सम्पदा गिरवी रख सकते थे। इसके अलावा ये बैंक सरकारी गारंटी पर भी ऋण देते थे परंतु औद्योगिक व्यापार के लिए ऋण देने के प्रति अधिक उत्सुक नहीं होते थे।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक उद्यमी अपने कमाए हुए धन से ही काम करते थे या व्यापारियों द्वारा उन्हें धन की प्राप्ति होती थी। इसके अलावा वे स्वर्णकारों और बहुमूल्य धातुओं का काम करने वाले लोगों से कर्ज लेते थे। टर्न पाइक ट्रस्ट और कनाल कम्पनी के अधिकारी तथा कर प्राप्तकर्ता भी उन्हें मुद्रा उपलब्ध कराते थे। यह बड़े ही आश्चर्य की बात लगती है परंतु वास्तव में भूमि कर और रसीदी टिकट शुल्क के स्थानीय संग्रहकर्ताओं (कलक्टर्स) जैसे कुछ अधिकारियों को जनता से उगाहे गए शुल्क को एक साल तक अपने पास रखने का अधिकार था; उत्पाद शुल्क पर यह लागू नहीं था। वे स्थानीय कृषकों, उत्पादकों और व्यापारियों को कर्ज दिया करते थे।

कृषि और उद्योग में वाणिज्यिक गतिविधियों में तीव्रता आने पर गांव के बैंकों ने भी इन बैंकरों का अनुगमन किया। इन देशी बैंकों की स्थापना शताब्दी के मध्य में बढ़ते व्यापार की अवधि में हुई (उदाहरणार्थ 1750-3,

1762, 1765-6, 1770-3 और 1789-92)। ये संगठन छोटे थे और कुछ स्थानीय उद्योगों पर आधारित थे। इनका अपना अलग कार्यालय होता था। मुश्किल आने पर लंदन के बैंक भी उनकी मदद करते थे। 18वीं शताब्दी के मध्य और उत्तरार्द्ध में जब उत्पादन उद्योगों को इनकी आवश्यकता हुई उस समय तक संसाधनों के पुनर्वितरण के लिए एक पूरी व्यवस्था कायम हो चुकी थी।

बोध प्रश्न 1

1) 'संशोधनवादी' इतिहासकारों का मुख्य मत क्या था ?

....
....
....
....
....
....

2) औद्योगिक पूंजीवाद के विकास में कृषि क्रांति ने किस प्रकार मदद पहुंचाई ?

....
....
....
....
....
....

3) क्या इतिहासकार स्पष्ट रूप से यह दिखा सके हैं कि अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण 'जन्म-दर' में बढ़ोत्तरी थी।

....
....
....
....
....
....

4) आरंभिक उद्यमियों के लिए पूंजी के स्रोत क्या थे ?

....
....
....
....
....
....

9.4 उत्पादन उद्योग

इंगलैंड के कई क्षेत्रों में उत्पादन इकाइयों की स्थापना हुई। इन इकाइयों ने उपर्युक्त वर्णित कई परिवर्तनों को आत्मसात किया। जहां-जहां संसाधन उपलब्ध थे वहां-वहां ये निर्माण इकाइयां स्थापित की गईं। इन इकाइयों के निर्माण में स्थल विशेष का भी ध्यान रखा गया। खनन के मामले में यह अपरिहार्य था। उदाहरण के लिए टिन का खनन कर्निवाल में, सीसा कम्बरलैंड, वेस्ट डरहम और डरबीशायर में पाया जाता है जबकि मिट्टी

के बर्तन बनाने के लिए उपयुक्त मिट्टी स्टैफोर्डशायर में और कोयला श्रॉपशायर, बरसेस्टरशायर, स्टैफोर्डशायर, योर्कशायर और साउथवेल्स के खानों में पाया जाता था। अब्राहम डरबी ने 1709 के बाद पक्के कोयले के साथ लोहे का खनन और इसे बनाने का काम भी शुरू किया। इसके अलावा व्यापार केंद्रों में भी उद्योग स्थापित हुए। लंदन सबसे बड़ा व्यापारिक केंद्र था जहां न केवल कार्न मिल, शराब का कारखाना, चर्मशोधनशाला थे बल्कि वहां फैशन के समान भी बनाए जाते थे। इसके अलावा यहां कोच, फर्नीचर, नारी-शिरोवस्त्र, चांदी के बर्तन और गहने भी बनाए जाते थे। इसके अलावा ब्रिस्टल में पानी के जहाज बनाए जाते थे और यहां वेस्टइंडीज के कृषि उत्पादों (चीनी, तंबाकू) को परिष्कृत किया जाता था और यहां शीशा, बर्तन और पीतल की भी उत्पादन इकाइयां थीं। लीवर पूल में शिपयार्ड थे (जहां और भी कई चीजें बनाई जाती थीं)। न्यू कैसल में इस्पात की भट्टियों के अलावा लाहे के लंगर, जंजीरें, गैंती, बेलचा और कटलरी (छुरी, चम्मच, कांटे आदि) बनाए जाते थे।

इन उद्यमों की संरचना अलग अलग थी। इस प्रकार की व्यवस्था में कुशल कारीगर घर में काम कर सकता था या औजार लेकर नजदीक की दुकान में काम कर सकता था और अपना माल इकट्ठा करके उसे बाजार में बेच सकता था। अक्सर वह अपने साथ काम करने वाले एक दो सहायक और बाजार जानेवाला कर्मचारी रखता था और कभी-कभी इसी उद्योग में लगे लोगों को काम भी दे देता था।

दूसरे प्रकार की संरचना एक बड़ा उद्यम हो सकती थी, जैसे कपड़ा उद्योग। इसमें कताई, बुनाई, रंगाई, भंडारण और अन्तत: मालिक और उसके परिवार के रहने के लिए अलग-अलग इमारतें होती थीं। एक दूसरी व्यवस्था को 'पुटिंग आउट' के नाम से जाना जाता था। ऊन उद्योग में यह व्यवस्था ज्यादा प्रचलित थी। इस व्यवस्था में बुनकर और जुलाहों को धागा दे दिया जाता था जो अपने घर पर काम करते थे और माल तैयार करके मालिक को दे दिया करते थे। पुटिंग आउट की यह व्यवस्था 150 मील के वृत तक फैली होती थी उदाहरण के लिए लंदन से उत्तर की ओर वेस्टमोरलैंड तक।
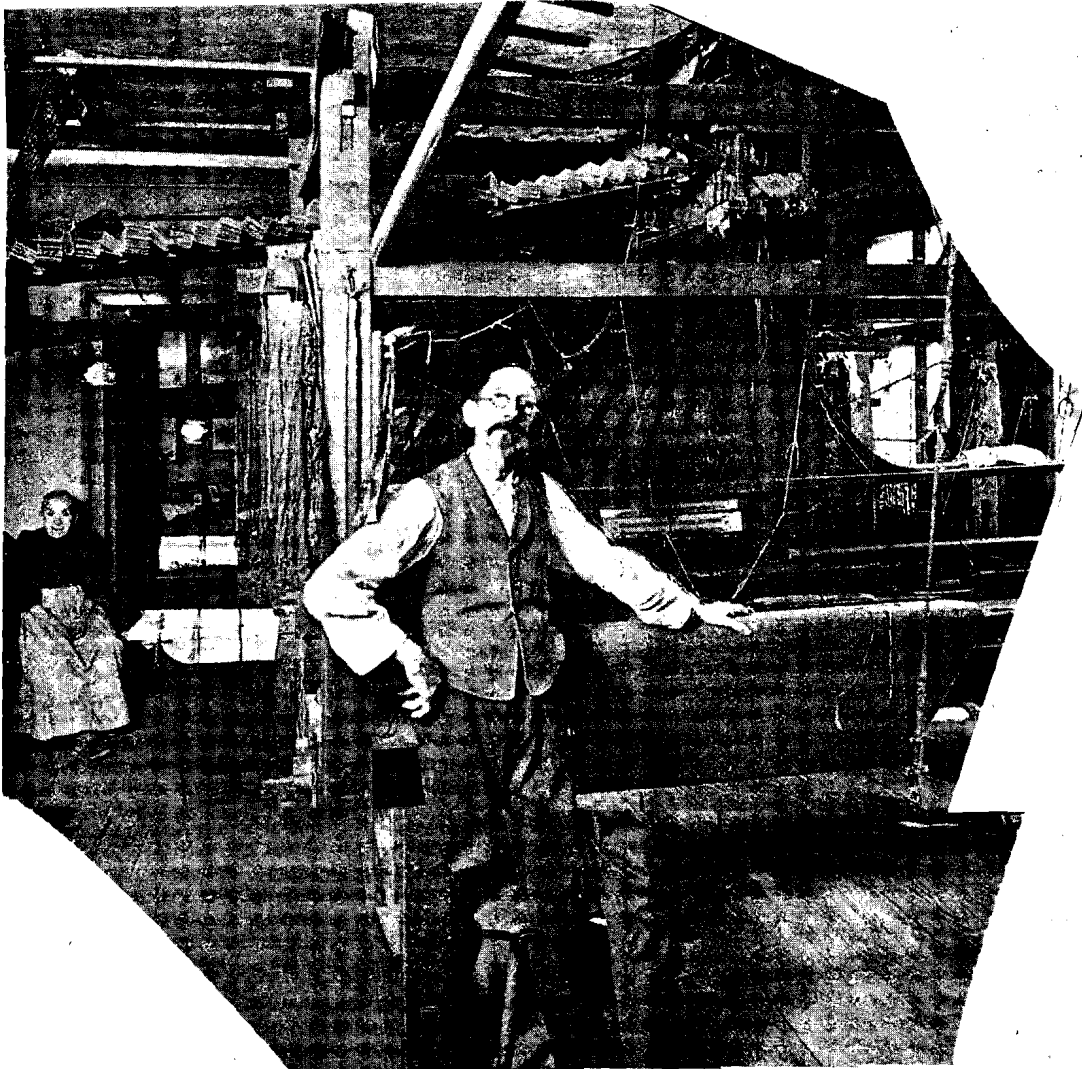
चित्र 1 : घरेलू कारीगर : इंगलैंड में घर में काम करता एक बुनकर

9.4.1 नए परिवर्तन और इसके प्रभाव

अठारहवीं शताब्दी में इन निर्माण उद्योग की इकाइयों में उपर्युक्त वर्णित कारकों (कृषि उत्पादों और श्रम आदि की बढ़ती उपलब्धता) के कारण बदलाव आया और कई नई प्रौद्योगिकी परिवर्तन भी हुए। सर्वाधिक महत्वपूर्ण आविष्कार सर्वविदित हैं :

- कपड़ा उद्योग में के (Key) द्वारा निर्मित फ्लाइंग शटल (1733) सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जिससे सूत कातने की गति में काफी तीव्रता आई। आर्कराइट की स्पीनिंग जेनी (1769) और बाद के नूतन आविष्कारों से कताई में काफी तेजी आ गई। मसलन 1779 में कॉम्पटन ने म्यूल का आविष्कार किया। आर्कराइट ने 1785 में कताई के लिए पानी से चलने वाला फ्रेम बनाया, 1785 में कार्टराइट ने यांत्रिक शक्ति से चलने वाला करघा पावरलूम तैयार किया।
- कोयला और लोहा उद्योग में, अब्राहम डरबी (1709) द्वारा कोक कोयले से परिष्कृत विकास और कोर्ट द्वारा पलटनी, हथौड़ा के उपयोग से लोहा गलाने के लिए देश में उपलब्ध कोयले के विशाल भंडार का उपयोग करना संभव हो सका। परंतु अभी भी भुरभुरा लोहा ही बन पाता था जो अपरिष्कृत था और आसानी से टूट जाता था। लोहा तैयार करने के लिए चारकोल की जरूरत थी जिसकी काफी कमी थी। जहां तक कोक के इस्तेमाल की बात है नए प्रयोगों से कोयले की गुणवत्ता में बदलाव आया जबकि अन्य आविष्कारों से लोहे से अशुद्धियों को निकालने की नई तकनीक विकसित की गई।
- न्यूकॉमेन ईंजन (1705-06) से उत्पादन में वाष्प शक्ति का उपयोग किया जा सका। इसके अलावा जेम्स वॉट के द्वारा बनाए गए ईंजनों से लकड़ी और धातु की बनी बड़ी मशीने चलाना संभव हुआ था जिससे अब उद्यमी संसाधनों का उपयोग ज्यादा किफायत के साथ कर सकते थे।

चित्र 2 : आरंभिक ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति का एक दृश्य : लोहे की भट्टी पर काम करता एक परिवार

इसके अलावा समय समय पर छोटे मोटे सुधार होते रहे। इससे मशीने बेहतर होती गईं और व्यापार की गति में तेजी आई।

इन खोजों से अर्थव्यवस्था में उत्पादन प्रक्रिया का आयाम विकसित हुआ और उद्योग की अन्य शाखाओं में निवेश

में वृद्धि हुई। उदाहरण के लिए जब उत्पादन के लिए जल शक्ति का उपयोग किया जाता था तो उस समय घोड़ों, उनके रखरखाव, तालाब, बांध, पन-चक्की आदि में काफी निवेश करना पड़ता था। जलवायु शक्ति या वाष्प शक्ति के आविष्कार के बाद इनमें से कई निवेश कम हो सके। जेम्स वॉट की घूमने वाली ईंजन के आने के बाद मशीन चलाने में पन-चक्की का इस्तेमाल बंद हो गया। इस आविष्कार से उद्यमियों को काफी राहत मिली। अब उसे अपनी मशीनों को चलाने के लिए पानी की आवश्यकता नहीं थी। इसके साथ ही साथ लोहे की कीमतों में भारी गिरावट आने से मशीन बनाने में मंहगें तांबे या पीतल की जगह सस्ते लोहे का इस्तेमाल किया जा सकता था। अब इमारतों के निर्माण में लकड़ी के स्थान पर टिकाऊ लोहे का इस्तेमाल किया जाने लगा।

समय का सदुपयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। जैसा कि सर जॉन बर्नार्ड नामक एक व्यापारी ने सुझाव दिया : "सभी चीजों से बढ़कर है समय का मूल्य पहचानना और हर क्षण का उपयोग इस प्रकार करना मानो आपको आगे मौका मिलने वाला नहीं। समय के सही उपयोग से हम सारी खुशियां पा सकते हैं और समय गंवाया तो सबकुछ खो सकते हैं।'' (**ए प्रेजेन्ट फॉर ऐन एप्रेन्टिस** (1741)) "पुटिंग आउट'' को समाप्त कर यही किया गया ; अब कारखाने उत्पादन के केंद्र बन गए और उत्पादन की प्रक्रिया पर उद्यमी की पूरी पकड़ हो गई। इसके अलावा इस समय हुई खोजों से "मापक अर्थव्यवस्था''. (एकोनोमिज ऑफ स्केल) कायम हुई अर्थात उत्पादन ज्यादा होने लगा और प्रति इकाई उत्पादन की लागत में कमी आई।

9.4.2 उद्यमशीलता की सामाजिक प्रेरणा

यह बात बार-बार दुहराई जा चुकी है कि ब्रिटिश समाज की प्रकृति ने उद्यमशीलता के उदय और उत्थान को बढ़ावा दिया। व्यापार, उत्पादन या अन्य किसी पेशे में धन कमाने की इच्छा के कारण लोगों के पास धन इकट्ठे हुए जिससे लोगों के व्यक्तिगत हैसियत और स्तर तय होते थे। यूरोपीय समाज में यह प्रवृत्ति नहीं पाई जाती थी। कुलीनवर्ग स्वयं इन गतिविधियों में निवेश करते थे और उत्पादन में शरीक होते थे। कोयला भूमि के मालिकों पर यह बात पूरी तरह लागू होती थी।

ब्रिटेन में प्रोटेस्टेंट 'डिसेंटर्स' (अलग मत रखने वाले) के समूह थे (जैसे क्वेकर) जो आपस में काफी अच्छी तरह जुड़े हुए थे। ये एक दूसरे पर काफी भरोसा करते थे और आपस में मदद भी करते थे। भूमिपतियों से ये दूरी बनाकर रखते थे। इस समूह ने बचत को बढ़ावा दिया और व्यापार की ओर प्रवृत्त हुए। बर्कले परिवार इस प्रकार का अच्छा उदाहरण है और बैंकिंग में उसका योगदान सर्वविदित है।

9.4.3 परिणाम

इस परिवेश का निर्माण उद्योग के उत्पादन पर काफी प्रभाव पड़ा। कोयला उद्योग में, जो उत्तरी क्षेत्र में स्थित था, 1701-10 और 1791-1800 के बीच निर्यात चार गुना बढ़ा। कॉर्नवाल में 1731-40 के बीच तांबे का उत्पादन औसतन 7,500 टन था परंतु 1794-1800 की अवधि में यह 48,000 टन हो गया। लौह उद्योग में 1720 में लौह पिंड का उत्पादन लगभग 25,000 टन था ; 1788 में 61 हजार, 1796 में 109,000 और 1806 में 227,000 टन उत्पादन का अनुमान लगाया गया। कपड़ा उद्योग में योर्कशायर में 1731-40 में 34,400 थान कपड़े बनाए गए जबकि 1791-1800 में यह उत्पादन बढ़कर 229,400 थान तक पहुंच गया। 1700 और 1790 के बीच छींट के कपड़े का उत्पादन 2.4 मिलियन गज से बढ़कर 25.9 मिलियन गज हो गया और कपड़ा उद्योग के निर्यात का मूल्य जो 1701 में 24,000 पाउंड था वह 1800 में बढ़कर 5,851,000 पाउंड हो गया।

9.5 बाजार और मांग

विदेशी और घरेलू बाजार में अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण के कारण अंग्रेजी वस्तुओं के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई। एम.डब्ल्यू लिप ने इसका उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया :

i) उत्तरी इंगलैंड और स्कॉटलैंड में 1740 के पहले लोगों की आय में वृद्धि होने के कारण उत्पादन को बढ़ावा मिला परंतु इस कारक पर जरूरत से ज्यादा बल देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस क्षेत्र में एक तिहाई लोग ही रहते थे। आय में वृद्धि होने से अनाजों की खरीददारी बढ़ी। विदेशों में भी थोड़ी बहुत मांग बढ़ी। इस अवधि में उत्तर की गरीब जनता पर खासा प्रभाव पड़ा। "उनकी आय तो बढ़ी परंतु उनके खर्चे भी बढ़े और बाजार में उत्पादित होने वाली वस्तुओं के वे ग्राहक बन गए।'' जहां तक विदेशी व्यापार का

सवाल है देश के निर्यात में ऊन का स्थान नए उत्पाद् (कपड़ा, धातु से बने समान और अन्य तैयार वस्तुए) लेने लगे।

ii) 1740 के बाद वास्तविक आय की वृद्धि में कमी आई परंतु विदेशी बाजार में अपेक्षाकृत ज्यादा वृद्धि हुई, "जबकि सात वर्षीय युद्ध के बाद विदेशी मांग में आई कमी को संतुलित करने के लिए वास्तविक मजदूरी बढ़ाई गई। उतार-चढ़ाव की यह स्थिति 1780 के दशक में भी देखने को मिली, जब अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के बाद विदेशी बाजार सुधरा और बढ़ती हुई कीमतों का असर वास्तविक मजदूरी पर भी पड़ा। 1780-90 के दशक में गरीबों की वास्तविक मजदूरी तो घटी परंतु मध्य और उच्च वर्ग की क्रय शक्ति और विदेशी मांग में तेजी से वृद्धि हुई। फ्रांसीसी क्रांति युद्धों के बाद यह स्थिति पैदा हुई जब इंगलैंड ने फ्रांसीसी उत्पादों पर आश्रित बाजारों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। 1805-14 के नेपोलियन के युद्धों के दौरान इंगलैंड की स्थिति और भी मजबूत हो गयी। ब्रिटिश सरकार ने महाद्वीप के अन्य बन्दरगाहों का रास्ता रोक दिया। इससे ब्रिटेन को अमेरिका के बाजार पर नियंत्रण करने में और मदद मिली।

इसके साथ-साथ ब्रिटेन में गरीब तबकों की मांगों में वृद्धि होने से कृषि उत्पादों और परिवहन उद्योगों में वृद्धि हुई जिससे ये जुड़े हुए थे परंतु मध्य वर्ग की मांग का असर व्यापक पड़ा। यूरोपीय महाद्वीप के अन्य देशों के मुकाबले इंगलैंड में मध्य वर्ग की संख्या बढ़ी थी। इस विकास का एक लम्बा इतिहास है। परंतु इसने एक ऐसा बाजार निर्मित किया जहां केवल उत्तम वस्तुओं की नहीं बल्कि व्यापक पैमाने पर वस्तुओं की जरूरत पड़ी विशेषकर जो मशीनों के उत्पादन के अनुकूल थे।

हालांकि अठारहवीं शताब्दी के दौरान मुक्त व्यापार और लैसेज फेयर का उदय हुआ परंतु इस समय उत्पादकों द्वारा एक साथ मिलकर मूल्य और उत्पादन तय करने की प्रवृत्ति का भी विकास हुआ था। अतएव इस परिघटना से इस समय के औद्योगिक विकास को अलग करके नहीं देखा जा सकता है। 1707 में हड्र्सफील्ड के नजदीक पुलिंग मिल इस बात का प्रमाण है कि वहां एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित कर काम करने का नियत समय और उत्पादों का न्यूनतम मूल्य तय किया जाता था। भट्ठी के लोहे के मालिक यह तय करते थे कि कोयले के लिए वे अधिकतम कितना भुगतान कर सकते थे। 1760 के दशक में ऐटमौसफेरिक ईंजन की मांग बढ़ने पर अब्राहम डर्बी और जॉन विल्किन्सन ने एक आम बिक्री नीति बनाई थी। लोहा मोड़नेवालों, चांदी की प्लेट बनाने वाले उत्पादकों, सान चढ़ानेवालों और औजार बनानेवालों के बीच भी तालमेल स्थापित था।

यह सही है कि इनमें से कुछ तालमेल तो अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया था परंतु इससे यह तो स्पष्ट था ही कि विकास की परिस्थितियों को नियंत्रित करने में ब्रिटिश सरकार रुचि ले रही थी। इन निकायों को अपने सदस्यों और उनकी गतिविधियों को नियंत्रित करने का कानूनी अधिकार प्राप्त था। हैलमशायर की कर्लरस कम्पनी और फ्रेमवर्क निटर्स कम्पनी में ऐसा ही परिवेश कार्नवाल था और डर्बीशायर के खनन उद्योगों और डीन के वन में स्थापित पुराने संगठनों को भी इसी प्रकार के अधिकार मिले हुए थे। परंतु उन्नसवीं शताब्दी में राष्ट्रीय स्तर पर स्वयं उत्पादकों ने अपने प्रयास से यह तालमेल स्थापित किया। टी.एस.एशटन के अनुसार: "1785 में कॉर्निश मेटल कम्पनी और ऐंग्लेसे कम्पनी ने मिलजुलकर तांबे के बाजार को आपस में बांट लिया। इसी समय कराधान के खतरे और विदेश से आने वाली प्रतिस्पर्द्धा का सामना करने के लिए लोहे के मालिकों, बर्तन बनाने वालों, बर्मिंघम के उत्पादक और यहां तक कि निजी तौर पर सूत बनाने वाले जेनरल चैम्बर ऑफ मैनुफक्चरर्स के तहत इकट्ठे हुए। इनके बीच कुछ छिपा समझौता और आपसी समझ भी हो सकता है परंतु इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं मिला है। अभी तक उद्योगपति और जनता अर्थशास्त्रियों की इस शिक्षा को आत्मसात नहीं कर पाए थे कि उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्द्धा होने से लाभ होता है बल्कि अभी तक यही धारणा कायम थी कि प्रतियोगिता बढ़ने से गुणवत्ता में कमी आती है। अभी भी इस समय के प्रभावशाली लोग उत्पादन वृद्धि और न्यूनतम कीमत की अपेक्षा व्यवस्थित व्यापार को ज्यादा उपयोगी मानते थे।"

9.5.1 राज्य की भूमिका

हालांकि तालमेल स्थापित करने में सरकार की भूमिका बहुत ज्यादा नहीं थी परंतु इस समय की अर्थव्यवस्था के विकास में इसका योगदान महत्वपूर्ण था। चैथम स्थित शाही शस्त्रागार और ग्रीनविच स्थित अन्य इकाइयों जैसे बड़े उत्पादन केंद्रों पर सरकार का नियंत्रण था। उन्होंने जटिल औद्योगिक संगठन का नमूना पेश किया और कई लोगों को रोजगार प्रदान किया जबकि अभावग्रस्तता को रोकने के लिए स्थानीय प्राधिकारों ने छोटी इकाइयां अपने नियंत्रण में ले ली और देख रेख के लिए इसे ठेकेदारों के जिम्मे सौंप दिया। लौह उद्योग (विल्किन्संन, वोर्कर्स और कैरोन पार्टनर्स जैसे फर्म) को युद्ध सामग्री के लिए सरकार से भारी मात्रा में प्राप्त

आदेशमांग का विशेष महत्व था ; ऊन और कपड़ा उद्योगों पर भी यह बात लागू होती थी जो वर्दी, कम्बल आदि से संबंधित सरकारी आदेशों की पूर्ति करते थे। अन्यत्र उत्पाद् शुल्क (उत्पाद् के लिए लाइसेंस) की मात्रा से भी विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियां निर्धारित होती थीं।

जहाजरानी उद्योग के लिए नेविगेशन ऐक्ट (1660 में पारित) और इससे जुड़े विधान महत्वपूर्ण थे क्योंकि इसके अनुसार उपनिवेशों से व्यापार करते समय और एशिया, अफ्रिका और अमेरिका से सामान ढोने के लिए केवल इंगलिश जहाजों का ही इस्तेमाल किया जा सकता था। इससे लकड़ी, नौसेना और शराब (वाइन) के व्यापार को भी फायदा था। विदेशी जहाजों पर सामान भेजने पर "विदेशी शुल्क" (एलियन ड्यूटी) लगता था और सरकार संरक्षणवादी नीति अपनाती थी (1698 में आयात शुल्क 10% था जो 1698 में बढ़कर 15%, 1704 में 20%, 1747 में 25%, 1759 में 30% और 1782 में 35% हो गया)। कई वस्तुओं पर विशेष शुल्क लगाए गए। जहां तक कृषि उत्पादों का सवाल है उसमें मक्के के आयात पर लगाया गया शुल्क सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। इस आयात शुल्क के लिए कार्न लॉ (मक्का कानून; 1670 में पारित) बनाया गया। यह घरेलू मूल्य से 25% ज्यादा होता था। जब कीमत अधिक होती थी तो यह अन्तर कम हो जाता था।

कैनिंग और वेलिंगटन के नेतृत्व में टोरी शासन के दौरान 1820 के दशक में इंगलैंड के संरक्षणवादी शासन में थोड़ा ढीलापन आया जब बोर्ड ऑफ ट्रेड में हसकिसन ने कई शुल्क या तो कम कर दिए या समाप्त कर दिए। हालांकि इस ढीलेपन के कारण कई प्रमुख सामाजिक, राजनैतिक और मौद्रिक समस्याएं पैदा हुई जिसका प्रतिफलन कॉर्न लॉ के उन्मूलन के लिए हुए संघर्ष में प्रतिबिंबित हुआ (जो 1846 में जाकर समाप्त हुआ)। 1830 के दशक के दूसरी विग सरकार के कल्याणकारी विधान (खासकर 1834 के पूअर लॉ अर्थात गरीबों कि लिए कानून) से यह स्थिति स्पष्ट हो जाती है कि यहां तक कि उदारवादियों और ओवेन शैडविक जैसे उपयोगितावादियों से युक्त दल भी लैसेज फेयर पर बात करने के लिए तैयार थे और सरकार के द्वारा ऐसे निर्णय लिए जाने से सहमत थे जो "अधिक लोगों की ज्यादा खुशी" को थोड़े उद्यमियों के लोभ से बचा सकें। यह ठीक है कि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में मुक्त व्यापार के परिवेश में इंगलैंड का औद्योगीकरण हुआ परंतु यह भी उतना ही सही है कि औद्योगिक क्रांति के समय इसके अस्तित्व ने इसका महत्व बढ़ा दिया।

9.6 औद्योगिक क्रांति की पुनर्स्थापना

ब्रिटेन में औद्योगिक पूंजीवाद के उदय और विकास से संबंधित जिन प्रश्नों पर अभी हमने विचार किया है उसे मैक्सिन बर्ग और पैट हडसन ने बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया है। औद्योगिक क्रांति को 'पुनर्स्थापित' करने के प्रयत्न में उन्होंने इन सवालों पर विचार किया है।

9.6.1 ग्रेजुअलिस्ट आरग्यूमेंट और इसके आलोचक

i) 'ग्रेजुअलिस्ट'' विचारकों ने एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जिसने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। इनके अनुसार "नए आंकड़ों के सहारे यह दिखाया गया कि औद्योगिक उत्पादन और सकल घरेलू उत्पाद में धीरे-धीरे वृद्धि हुई।" तर्क प्रस्तुत किया गया कि "उत्पादकता धीरे-धीरे बढ़ी ; स्थिर पूंजी अनुपात, बचत और निवेश धीरे-धीरे ही परिवर्तित हुए ; 1830 के पहले मजदूरों का जीवन स्तर और उनका व्यक्तिगत उपभोग कमोबेश अछूता रहा और इसमें कमी तो नहीं ही आई।" इन तथ्यों से यह पता चलता है कि " औद्योगिक और सामाजिक बदलाव के व्यापक आर्थिक पैमाने मौजूद नहीं थे"; इस प्रकार, " औद्योगिक क्रांति की अवधारणा को लगभग खारिज कर दिया गया और यह स्थापित किया गया कि यह कृषि से गैर कृषि की ओर जाने के कारण रोजगार में ढांचागत परिवर्तन हुआ था और यह परिवर्तन तुरंत नहीं बल्कि धीरे-धीरे हुआ।"

ii) "अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक विरोध और परिवर्तनवाद (रैडिकलिज्म) की निरंतरता पर बल दिया गया"। "अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जनसंख्या में हुई बढ़ोत्तरी में भी इसी निरंतरता पर बल दिया गया और यह कहा गया कि यह प्रवृत्ति 1840 के दशक तक कायम रही"; "सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास लेखन में कहा गया कि इंगलिश औद्योगिक बुर्जुआ राजनैतिक और आर्थिक प्रभुत्व पाने में असफल रहे....."

एन.एफ.आर. क्राट्स के लेखन और कैम्ब्रिज स्कूल के जनसंख्या संबंधी अध्ययन (ई.ए.रिंगले और आर. एस.शेफिल्ड के लेखन, खासकर **द पोपुलेशन हिस्ट्री ऑफ इंगलैंड**, 1541-1871) 'ग्रेजुअलिस्ट' विचारधारा का समर्थन करने वाले प्रमुख साहित्य है।

बर्ग और हडसन ने ग्रेजुअलिस्ट विचारकों के तर्क और आंकड़ों की कड़ी आलोचना करते हुए लिखा है कि:

क) काट्स ने जिन आंकड़ों का हवाला दिया है उसमें औद्योगिक मजदूर के रूप में बच्चों और महिलाओं की भूमिका को नकार दिया गया है। उनकी मजदूरी पुरूषों की मजदूरी से कम थी और उपकरण भी इस तरह तैयार किए गए थे कि पुरुष इस पर आसानी से काम कर सकें : ''औद्योगिक क्रांति में बाल मजदूरी के योगदान और महत्व को उजागर किया गया। कपड़ा उद्योग में बाल श्रमिकों से काम करवाया जाता था और मशीन भी उनके अनुरूप ही बनाए जाते थे। स्पीनिंग जेनी इसका ज्वलंत उदाहरण है। आरंभ में जो देशी जेनी बनाई गई थी जिसमें चक्के क्षैतिज रूप में लगे हुए थे जिससे 9 वर्ष से लेकर 12 वर्ष तक के बच्चे को काम करने में सुविधा होती थी। ऊन, रेशम और सूती उद्योग के मशीनीकरण और कारखाना संगठन के आरंभिक चरण में मशीन की डिजाइन बनाते समय बाल श्रमिकों का ही ध्यान रखा जाता था, यह मान लिया गया था कि बाल श्रमिकों को ध्यान में रखकर ही कपड़ा उद्योग में काम में लाई जानेवाली मशीन बनाई जानी चाहिए।''

ख) काट्स ने अपने आंकड़ों के लिए जिन उद्योगों का नमूने के तौर पर हवाला दिया उसमें भोजन तैयार करने, धातु के समान, शराब के कारखाने, शीशा, फर्नीचर, कोच निर्माण, रसायन और इंजिनीयरिंग में होने वाले परिवर्तन को कम करके आंका। इस प्रकार किसी खास क्षेत्र में परिवर्तन के प्रभाव को कम करके आंकने की कोशिश की गई। जरूरत पूरे परिवेश और माहौल को समग्रता से देखने की है क्योंकि इसी से परिवर्तन का 'क्रांतिकारी' परिदृश्य स्पष्टता से उभर कर सामने आ सकेगा।

अतएव बर्ग और हडसन का यह मानना है कि यदि महिलाओं और बाल श्रमिकों के आंकड़ों को समुचित रूप से शामिल कर लिया जाए तो धीमी उत्पादकता गति संबंधी 'ग्रेजुअलिस्ट' अवधारणा धाराशाई हो जाएगी। हालांकि इसे औद्योगीकरण की एक खास विशेषता बताई गई थी और यह भी बताया गया था कि तीव्र और 'क्रांतिकारी' उन्नति के लिए यह जरूरी था।

9.7 1840 के बाद औद्योगिक पूंजीवाद में आई मजबूती

उपर्युक्त वर्णित अवधि में हुई वृद्धि के बाद उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में ब्रिटेन में औद्योगिक पूंजीवाद मजबूत हुआ। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर रेलवे के निर्माण में हिस्सा लेकर भी अंशत: यही कार्य किया गया। परंतु 1870 के दशक के बाद यूरोप और संयुक्त राज्यों में कपड़ा उद्योग और इस्पात उत्पादन के बढ़ते महत्व के कारण ब्रिटिश उत्पादकों को कठिन प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ा। यहीं से 'ग्रेट डिप्रेसन (भयानक मंदी) के दौर की शुरुआत मानी जाती है। इस मंदी से कृषि और उद्योग दोनों प्रभावित हुए। 1870 के दशक से इंगलैंड के बाजारों में उत्तर अमेरिका से सस्ता अनाज आने से और नए औद्योगिकृत देशों से आने वाली प्रतिस्पर्द्धा के कारण ऐसा हुआ। चारों ओर नई-नई खोजें हो रहीं थीं और ब्रिटेन अपनी मौजूदा अधिसंरचना को तदनुरूप बदलने में दिक्कत महसूस कर रहा था और कई मामलों में तो ये खोजें उनके प्रतिस्पर्द्धियों के लिए ज्यादा अनुकूल साबित हो गईं (जैसे इस्पात बनाने की थॉमस गिलक्राइस्ट प्रक्रिया)। हालांकि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उत्पादन स्तर ऊंचा था परंतु शताब्दी के आरंभ की स्थिति अब नहीं रह गई थी और उसका औद्योगिकरण पर एकाधिकार नहीं रह गया था। विद्युत और रसायनिक उत्पादों में जर्मनी और संयुक्त राज्य उसके मुकाबले तेजी से आगे बढ़ गए थे।

9.7.1 रेलवे का महत्व

1825 में इंगलैंड में पहला डार्लिंगटन-स्टॉकटन रेल की स्थापना की गई और उसके बाद वाष्प चलित ईंजन में लगातार विकास होता रहा। इससे ब्रिटेन का लोहा और कोयला उद्योग काफी प्रभावित हुआ जहां से कच्चा माल, लोहे की पटरी आदि की आपूर्ति होती थी। रेलवे ने 'एकोनोमिज ऑफ स्केल' में भी योगदान दिया क्योंकि इससे कई उद्योगों के परिवहन समय में कमी आई और सामान ले जाने के खर्चे में भी काफी फर्क पड़ा (इसके पहले सड़क, नहर, और जल मार्गों से यातायात होता था)। इंगलैंड में ही नहीं बल्कि अमेरिका, भारत, यूरोप में भी रेलवे लाइन बनाई गई और इससे ब्रिटेन के उद्योग को काफी समर्थन मिला और उनके निर्यात में तीव्र वृद्धि आई। उदाहरण के लिए 1830-50 के दौरान डॉलेस आयरन कम्पनी ने 12 ब्रिटिश कम्पनियों और । विदेशी कम्पनियों के साथ व्यापार किया। मांग का तुलनात्मक पैमाना नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है :

प्रतिदशक विश्व में लगने वाली लाइनें (मील में)

वर्ष	ब्रिटेन (यूके)	यूरोप, यू.के सहित	अमेरिका	विश्व के अन्य भाग
1840-50	6000	13000	7000	-
1850-60	4000	17000	24000	1000
1860-70	5000	31000	24000	7000
1870-80	2000	39000	51000	12000

(स्रोत: ई.जे हॉब्सबॉम, **इंडस्ट्री एंड एम्पायर** पृष्ठ 115)

हॉब्सबॉम ने बताया कि जिस समय निर्माण कार्य पूरी तेजी पर था (1846-8) उस समय ब्रिटिश रेलवे उद्योग में लगभग 200 मीलियन पाउंड निवेशित था और इसमें लगभग 200,000 लोग प्रत्यक्षत: कार्यरत थे। इसके कारण 1835-1845 के बीच देश के लोहा उत्पादन में लगभग 100% की वृद्धि हुई। 1840 के दशक में यदि औद्योगिक पूंजीवाद की अर्थव्यवस्था के लिए कपड़ा उद्योग निर्णायक साबित हुआ तो उसके बाद कोयला ओर लोहे की बारी आई। नीचे उद्योगों में हुई उत्पादन वृद्धि के आंकड़े दिए गए हैं और जैसा कि हॉब्सबॉम ने बताया है केवल कोयला क्षेत्र में रोजगार करने वालों की संख्या 1850 में 200,000 थी जो 1880 में बढ़कर 500,000 हो गई।

लौह-पिंड इस्पात और कोयला का उत्पादन ('000 टन)

वर्ष	लौह-पिंड	इस्पात	कोयला
1850	2250	49	49,000
1880	7750	1440	1,47,000

9.7.2 अभिनव परिवर्तन

लौह उद्योग के लिए लोहे से इस्पात बनाने की प्रक्रिया में हुए विकास का विशेष महत्व है क्योंकि लोहे की अपेक्षा इस्पात ज्यादा परिष्कृत और मजबूत होता है। सबसे पहले 1856 में हेनरी बेसेमर ने लोहे को इस्पात में ढालने की विधि निकाली जिसमें लोहे में कार्बन तत्व कम करके स्टील बनाया जाता था। इस प्रक्रिया को सर विलियम सीमेन्स और पियरे मार्टिन (1866) ने और भी सुधारा जिसे ओपेन हर्थ प्रोसेस के नाम से जाना जाता है। 1878 में सिडनी थॉमस और पी.सी. गिलक्राइस्ट ने कच्चे लोहे में फॉस्फोरस मिलाकर इस्पात बनाने की प्रवि विकसित की। इस प्रक्रिया का उपयोग इंगलैंड से ज्यादा यूरोपीय उद्योगों के लिए किया जाता था।
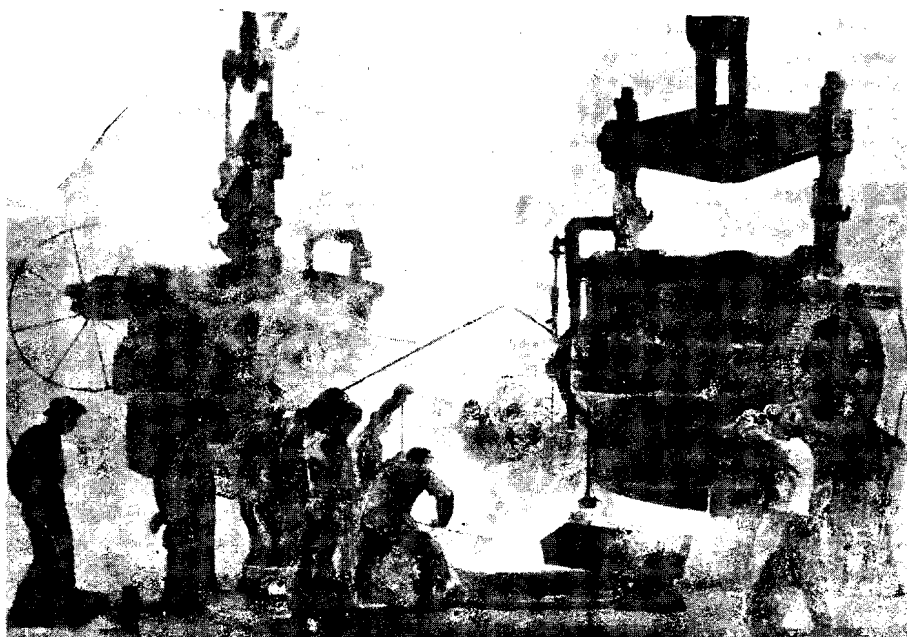
चित्र 3 : इस्पात बनाने का एक बेसेमर संयंत्र, 1900

9.7.3 पूंजी

औद्योगिक क्रांति के आरंभिक चरण के दौरान इकट्ठी की गई विशाल पूंजी के परिणामस्वरूप इस अवधि के अधिकांश उद्योगों का विस्तार हुआ। हॉब्सबॉम का मानना है कि 1840 के दशक तक ब्रिटिश उद्योग में निवेश करने के लिए लगभग 60 मिलियन पौंड पूंजी उपलब्ध थी (संभवतः पुनर्निविश की संभावनाओं पर विचार करने के बाद)। यह पूंजी सरकारी क्षेत्रों में ही निवेशित की जा सकती थी जिसका उत्पादन में हिस्सा लगभग 3.4% था। यह पूंजी रेलवे में लगाई गई (स्टॉकटॉन डार्लिंगटन ने 1839-41 में निवेश का लाभांश 15% कमाया और लिवरपूल-मैचेस्टर ने 1830 में 10% लाभ पाया)। एक बार इस प्रक्रिया के शुरू होते ही निवेशित की जाने वाली पूंजी का आकार बढ़ने लगा और 1870 तक आते-आते विदेशों में लगभग 700 मीलियन पाउंड निवेशित किया जा चुका था (इसमें से लगभग 25% संयुक्त राज्यों में निवेशित किया गया था)। इस निवेश के कारण एक ऐसी पूंजीगत गतिविधि शुरू हुई जो केवल उद्योग तक ही सीमित नहीं थी। 1840 के दशक में रेलवे निवेश के दौर में मैनचेस्टर, लिवरपुल और ग्लास्गो में प्रभुत्व स्टॉक एक्सचेंज उभर कर सामने आए।

9.7.4 प्रतियोगिता और औपनिवेशिक बाजार

1860 के दशक से यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं और संयुक्त राज्यों की अर्थव्यवस्था की ओर से प्रतिस्पर्द्धा बढ़ी और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर ब्रिटिश औद्योगिक पूंजीवाद में गिरावट आई। इसके परिणामस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी का अन्त होते-होते अल्पविकसित और औपनिवेशिक बाजारों का महत्व बढ़ गया।

इस संदर्भ में एरिक हॉब्सबॉम बिलकुल सही फर्माते हैं कि समय के साथ-साथ ब्रिटिश अर्थव्यवस्था (और अन्य यूरोपीय व्यवस्थाओं) के लिए औपनिवेशिक बाजार और अल्प विकसित क्षेत्रों के बाजारों का महत्व बढ़ गया क्योंकि यहां आसानी से और कम से कम प्रतियोगिता का सामना कर सामान बेचा जा सकता था। यूरोप में ब्रिटिश प्रौद्योगिकी को तेजी से अपना लिया गया और इसकी वजह से ब्रिटिश उत्पादकों को प्रतियोगिता का सामना करना पड़ा। औपनिवेशिक और अल्प विकसित देशों में ऐसा करना बहुत आसान नहीं था।

संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय बाजारों में प्रतियोगिता का सामना करने के कारण ब्रिटिश व्यापार अन्य बाजारों की ओर मुड़ा। जो नीचे दिए गए आंकड़े से स्पष्ट है :

तैयार कपड़ा का निर्यात (मिलियन गज) (कुल का%)

वर्ष	यूरोप/संयुक्त राज्य अमेरिका	अल्प विकसित देश	अन्य
1820	60.4	31.8	7.8
1840	29.5	66.7	3.8
1860	19.0	73.3	7.7
1880	9.8	82.0	8.2
1990	7.1	86.3	6.6

(**स्रोत** : ई.जे हॉब्सबॉम, **इंडस्ट्री एंड एम्पायर**, पृष्ठ 146)

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में ब्रिटेन में बाजार के रूप में अर्जेंटिना, ब्राजील, भारत और सुदूर पूर्व के देशों का महत्व बढ़ गया। भारत में औपनिवेशिक नियंत्रण बढ़ाने के लिए सरकार ने ब्रिटिश उत्पादकों को उनकी शर्तों के अनुरूप भारत में रेलवे निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया।

बोध प्रश्न 2

1) इंगलैंड में अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान किस प्रकार के उत्पादन उद्यम मौजूद थे ?

....

....

....

2) इंगलैंड में औद्योगिक वस्तुओं के बाजार में वृद्धि होने का एकमात्र कारक क्या आय में हुई वृद्धि थी ?

3) बर्ग और हडसन ने 'ग्रेजुएलिस्ट' मत की क्या आलोचना की है ?

4) 1840 के बाद इंगलैंड में औद्यौगिक पूंजीवाद में क्या प्रमुख परिवर्तन हुए ? पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

9.8 सारांश

इस इकाई में आपने निम्नलिखित पक्षों का अध्ययन किया :

- आपने इस पक्ष की जानकारी प्राप्त की कि अठारहवीं और आरंभिक उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान इंगलैंड में औद्योगिक पूंजीवाद ने क्या निर्णायक कदम उठाए।
- औद्योगिक पूंजी के विकास में कृषि क्रांति बहुत महत्वपूर्ण थी। इसने खाद्यान्नों की आपूर्ति बढ़ाई, कृषि से प्राप्त पूंजी उद्योगों के लिए उपलब्ध कराई तथा घेरेबंदी की व्यवस्था के फलस्वरूप उद्योगों के लिए ज्यादा श्रमिक उपलब्ध कराए।
- इस युग में कृषि उत्पाद् में वृद्धि होने से जनसंख्या में भी वृद्धि हुई और इस जनसंख्या ने इस युग की श्रम की मांग पूरी की।
- बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश के कारण उद्यमियों को पूंजी इकट्ठी करने में मदद मिली। अठारहवीं और आरंभिक उन्नीसवीं शताब्दी में हुई नई खोजों के कारण उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई।

- 1740 के पहले आय में हुई वृद्धि और मध्य वर्ग के उदय तथा 1740 के बाद विदेशी बाजार के विस्तार से औद्योगिक पूंजीवाद के लिए बाजार का क्षेत्र व्यापक हुआ।
- 'ग्रेजुअलिस्ट' विचारकों का मानना था कि जनसंख्या का विकास धीरे-धीरे हुआ और औद्योगिक उत्पादकता भी धीमी गति से आगे बढ़ी। इस सिद्धांत की आलोचना इस आधार पर की गई क्योंकि इसमें महिलाओं और बाल श्रमिकों पर विचार नहीं किया गया था और उभरते हुए औद्योगीकरण पर विचार करते समय सभी क्षेत्रों पर ध्यान नहीं दिया गया था।
- 1870 के दशक के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका और जर्मनी जैसे नए औद्योगिक राष्ट्रों के उदय के बाद ब्रिटिश पूंजीवाद को, क) अधिक प्रतिस्पर्द्धापूर्ण अन्तरराष्ट्रीय परिवेश का सामना करना पड़ा, खद्ध अधिक उत्पादान की अर्थव्यवस्था ('इकोनोमिज ऑफ स्केल') की शुरुआत हुई और, गद्ध विदेशों में पूंजी का निर्यात किया गया।

9.9 शब्दावली

जनसांख्यिकी : वह विज्ञान जिसमें जनसंख्या की विविध प्रवृत्तियों का अध्ययन किया जाता है। इसमें जन्मदर, मृत्युदर और जनसंख्या में होने वाले उतार चढ़ाव को शामिल किया जाता है।

एनक्लेव : इसका उपयोग यहा अर्थव्यवस्था के ऐसे क्षेत्रों के लिए किया गया है जहां औद्योगिक विकास होता है या नहीं होता है

लेसेजफेयर : प्रतिबंध मुक्त व्यापार

पुटिंग आउट : इस व्यवस्था के अन्तर्गत उद्यमी कारीगरों और शिल्पियों को अग्रिम तौर पर पूंजी और कच्चा माल दे दिया करते थे । शिल्पी अपने घर में काम करते थे और उद्यमियों को माल तैयार कर उपलब्ध कराते थे।

विश्व व्यवस्था : कुछ विद्वानों के अनुसार इस शब्दावली के द्वारा यह बताया गया है कि किस प्रकार विश्व व्यवस्था कायम करने के लिए औद्योगिक उत्पादन, विपणन और उपभोग को विश्व व्यापार के साथ जोड़ दिया जाता है।

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 9.2 इस प्रश्न का उत्तर देते समय बल इस बात पर होना चाहिए कि किसी खास युग को जरूरत से ज्यादा महत्व नहीं दिया जाना चाहिए।
2) देखिए भाग 9.3 और उपभाग 9.3.1 आप इसमें वाणिज्यिकरण की भूमिका पर विचार कर सकते हैं।
3) देखिए उपभाग 9.3.2 आप इसमें यह बता सकते हैं कि स्रोतों की कमी के कारण इतिहासकारों के हाथ किस प्रकार बंधे हुए हैं।
4) देखिए उपभाग 9.3.3 आप इसमें यह बता सकते हैं कि किस प्रकार उद्यमियों ने आपस में मिलकर अथवा न्यासों या अन्य व्यापारियों, आदि से ऋण उगाही की।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 9.4 आप इस प्रश्न का उत्तर देते समय बताइए कि पुटिंग आउट सिस्टम में कारीगर अपने घर पर अपने ही औजारों से काम करता था और उद्यमी उसे पूंजी उपलब्ध कराते थे, आदि।
2) देखिए भाग 9.5 आप इसमें विदेशों में उपलब्ध मांग जैसे कारकों की भी चर्चा कर सकते हैं।
3) देखिए उपभाग 9.6.1 इसमें आप बताइए कि किस प्रकार 'ग्रेजुअलिस्ट' विचारकों ने महिलाओं और बाल श्रमिकों की भूमिका को नजरअंदाज किया।
4) देखिए भाग 9.7 इंगलैंड का अब औद्योगीकरण पर एकाधिकार नहीं रह गया था। इस संदर्भ में ब्रिटिश औद्योगीकरण में आने वाले बदलावों का परीक्षण आप कर सकते हैं।